बहुत भटका रे तू मनवा | By Pradeep Ashirwad |

थकते-थकते जीवन को,
जीवन की संध्या गई।
चेत कर अब भी संभल जा,
काल बदरी छा गई।
****
बहुत भटका रे तू मनवा,
अब तो लव हर से लगा।
जिंदगी खो दी स्वप्न में,
अब तो निद्रा को भगा।

सोच कर मालिक ने भेजा,
काम उसके आएगा।
ज्ञान का दीपक जलाकर,
नाम उसका गाएगा।

भूल कर मालिक की मंशा,
हमने उसको भी ठगा।
बहुत भटका रे तू मनवा,
अब तो लव हर से लगा।

धर्म की बिगड़ी हुई अब,
काल कूर्की आएगी।
जिंदगी तेरी अधम,
नीलाम करती जाएगी।

झांक कर अपने हृदय में,
आत्म ज्योति को जगा।
बहुत भटका रे तू मनवा,
अब तो लव हर से लगा।

धर्म के पौधे को सींचे,
वो यहाँ फल पाएगा।
लोक में, परलोक में वो,
भी परम पद पाएगा।

"नंदू" सारे रिश्ते झूठे,
एक मालिक ही सदा।
बहुत भटका रे तू मनवा,
अब तो लव हर से लगा।

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ac%e0%a4%b9%e0%a5%81%e0%a4%a4-%e0%a4%ad%e0%a4%9f%e0%a4%95%e0%a4%be-%e0%a4%b0%e0%a5%87-%e0%a4%a4%e0%a5%82-%e0%a4%ae%e0%a4%a8%e0%a4%b5%e0%a4%be-by-pradeep-ashirwad/